अखिल भारतीय तेरापंथी पत्रकार चिंतन गोष्ठी आयोजित

तेरापंथी पत्रकार संगठन बनना चाहिए : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 3 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथी पत्रकार चिंतन गोष्ठी का आयोजन तेरापंथ भवन में आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के द्वारा किया गया। गोष्ठी में तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ पत्रकारों साहित युवा पत्रकार भी मौजुद थे। पत्रकारों ने आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के समय रही मीडिया की कमी पर ध्यान आकृष्ट किया तो वहीं समाचार पत्रों के वर्तमान दशा पर भी चिंता जाही की।

इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने कहा कि तेरापंथी पत्रकारों का एक संगठन होना चाहिए। वह संगठन जिम्मेदारी के साथ मीडिया जगत से संवाद कामय करे। आचार्यप्रवर ने सभी तेरापंथी पत्रकारों से मीडिया में कैसे पहुंचे, प्रसार में आने वाली समस्याओं और उनका समाधान आदि विषयों पर विचार जाने। मुनि कुमार श्रमण ने चिंतन मंथन के बाद प्रस्तुत हुए बिन्दुओं को प्रस्तुत किया। मुनि जयंतकुमार ने वर्तमान में समाचारों के प्रसारण सन्दर्भ में अपना मत रखा। वरिष्ठ पत्रकार लूणकरण छाजेड़, राजप्रभा दस्साणी, पुनम गुजरानी, अल्का सांखला, शीतल बरड़िया, कीर्ति बोरदिया, बच्छराज भूरा, हीरालाल कोठारी, अरिहंत भंसाली, विशाल जैन, अरूण जैन आदि पत्रकारों ने अपने विचार व्यक्त किये। चातुर्मास व्यवस्था समिति के कार्यकर्त्ताओं ने गोष्ठी को सफल बनाने में अपना श्रम नियोजित किया।

गीतकार भानावत की पुस्तक का विमोचन

आचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ भवन मे ंआज एक विशिष्ट समारोह में भीलवाड़ा के गीतकार एवं गायक संजय भानावत की पुस्तक 'आ जाओ गुरुदेव' का विमोचन किया। संजय भानावत ने अब तक 450 गीतों की रचना की है। उनकी यह दूसरी पुस्तक है। इससे पूर्व 'आओ स्वामीजी', 'तुम देने दर्शन' नाम से पुस्तक चर्चित हो चुकी है। भानावत की 'मां के आंचल तले', 'भिक्षु मुस्कायेगा', 'तुलसी अब तो आ जाएं' नाम से तीन एलबम आ चुके हैं, जो गीत रसिकों के बीच लोकप्रिय है। संजय भानावत, हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि

राज्यों के अनेक स्थलों पर स्टेज कार्यक्रम दे चुके हैं, आचार्य महाश्रमण ने गीतकार संजय भानावत को गायन में विकास करते रहने का आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में पहुंची दिल्ली ज्ञानशाला

सरदारशहर 3 अक्टूबर, 2010

दिल्ली ज्ञानशाला के बालक-बालिकाएं एवं प्रशिक्षकों ने आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में पहुंचकर आकर्षक प्रस्तुतियां दी। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम ज्ञानशाला है। ज्ञानशाला में बच्चों को जैन धर्म की जानकारी मिलने के साथ ही जीव का ज्ञान प्राप्त होता है। उन्होंने ज्ञानशाला के बच्चों से कंठस्थज्ञान की जानकारी लेने के साथ ही व्यक्तिगत तौर पर बच्चों से प्रश्नोत्तर भी मिले। दिल्ली ज्ञानशाला के बच्चों ने इस मौके पर गीत, परिसंवाद एवं लघु नाटिका की रोचक प्रस्तुतियां दी। मूलचन्द विकास कुमार मालू परिवार के प्रायोजक में ज्ञानशाला के बच्चों ने गुरु दर्शन यात्रा का लाभ लिया। प्रशिक्षण वर्ग ने गीत की प्रस्तुति दी। बालक-बालिकाओं एवं प्रशिक्षकों को साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा सहित साधु-साध्वियों ने प्रशिक्षण भी प्रदान किया।

आचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ महिला मण्डल के द्वारा ज्ञानशाला में प्रशिक्षण को कुशलता से सज़ादित किये जाने की सरहाना की। तेरापंथ सभा एवं युवक परिषद् का ज्ञानशाला संचालन में मिल रहे योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने अभिभावकों को प्रभावी पीढ़ी में संस्कार निर्माण करने में जागरूकता रखने की प्रेरणा दी। ज्ञानशाला के बच्चों के आवास की व्यवस्था कुबेर पैलेस में की गई।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)